कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण।
महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान।। ३० ।।

तेरहवीं सदी में उठकर खड़े हो जाएंगे। श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम मेंहदी की बीबी हूं और कुरान के छिपे भेद (रहस्य) जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १२२५ ।।

सनन्ध–ईसा इमाम के कजा की

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम।
काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम।। १ ।।

यहां ईसा मसीह (श्यामा महारानी) ने आकर सब इन्तजाम पहले से कर दिया और दज्जाल के हाथ काट डाले। उनके बाद में हकी स्वरूप इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आए।

अब सब्दातीतकी सब्द में, सोभा बरनी न जाए।
जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए।। २ ।।

अब ऐसे शब्दातीत की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। जो कुछ मैं कहती हूं वह माया के ही शब्द हैं। उनकी महिमा इस जबान से नहीं हो सकती।

खूबी तखत न केहे सकूं, इन जुबां के जोर।
जांनूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर।। ३ ।।

जिस तख्त पर बैठकर कजा करेंगे उस तख्त की शोभा इस जबान से नहीं कह सकती। लगता है अन्धकार और संशय की रात मिट गई है। ज्ञान का सवेरा हो गया है।

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर।
जाए न बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर।। ४ ।।

इस उजाले का भी हिसाब नहीं है। यह तारतम वाणी का नूरी उजाला है जिसका वर्णन इस जबान से नहीं होता। इस ज्ञान से हम पारब्रह्म की अंगनाएं उनके सामने खड़ी हैं।

आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम।। ५ ।।

उनके सामने जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील खड़ा है और हुकम का स्वरूप तथा जबराईल खड़ा है। रूहों को घर का और प्रीतम का जोश चढ़ा है।

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर।। ६ ।।

इस तरह न्याय के तख्त पर इमाम (श्री प्राणनाथजी) बैठे हैं। उनके सिर पर छत्र शोभा दे रहा है। कई चंवर डुलाए जा रहे हैं। रसूल साहब तथा अली (महाराजा छत्रसाल) आकर मिले तो घर-घर में बधाई बजी।

गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर।। ७ ।।

परमधाम के मोमिनों को संसार में कोई नहीं जानता था। वही अब इमाम साहब को घेर कर बैठे हैं, इसलिए सबको पहचान हो गई और घर-घर खुशियां हुईं।

Nijanand App

कई औलिए कई अंबिए, कई फरिस्ते पैगंमर।
सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर।।८।।

कई औलिया, अंबिया, फरिश्ते और पैगम्बर आगे आकर खड़े हो गए। इमाम साहब के आने की घर-घर में खुशियां होने लगीं।

आइयां किताबें जिन पर, बुजरक जो मेहेत्तर।
मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर।।९।।

वह महान् रसूल साहब जिन पर कुरान आई, उनके साथ मुसलमान आए और घर-घर में बधाइयां हुईं।

मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर।
पीछा कोई न रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर।।१०।।

मीर, मुरीद और फकीर कई भेषों के मुसलमान आए। पीछे कोई नहीं रहा, घर-घर में बधाइयां हुईं।

जुदी जुदी जातें जहान में, सब आवत हैं मिल कर।
होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर।।११।।

संसार की सब जातियां मिल-मिलकर आ रही हैं और सबको दर्शन हो रहा है। घर-घर में खुशियां हुईं।

दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर।।१२।।

चारों खूंटों (ओर) से दुनियां के लोग मंगल गीत गाते हुए इस एक दरवाजे पर इकट्ठे हो रहे हैं। घर-घर बधाइयां हुईं।

जिन्होने कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेख धर।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर।।१३।।

जिन्होंने कभी कानों से भी नहीं सुना था, ऐसे वर्ण, जाति के लोग भी भेष धर के उमंग में आ रहे हैं और घर-घर बधाइयां हो रही हैं।

बिना हिसाबें आलम, वैराट सचराचर।
दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर।।१४।।

चौदह लोकों का वैराट चल और अचल सभी दर्शन के लिए दौड़ते आ रहे हैं और इस तरह से सारा ब्रह्माण्ड उमड़ पड़ा है तथा घर-घर में बधाई हो रही है।

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारों की नजर।।१५।।

चौदह लोकों के नर-नारियों का ध्यान इस तख्त पर बैठे इमाम मेंहदी के चरणों में लगा है।

जब आया रब आलमीन, तब आया सबों आकीन।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन।।१६।।

जब सब ब्रह्माण्डों का खुदा आया, तब सबको यकीन आया। बाकी सब धर्म समाप्त हो गए। एक निजानन्द धर्म, जो एक धनी का पूजक है, खड़ा रहा।

Nijanand App

जात एक खसम की, और न कोई जात।
एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात।। १७ ।।

तब सब दुनियां के जाति-पाति के भेद मिट जाएंगे। सबकी एक जात हो जाएगी। सब दुनियां देवी देवताओं की पूजा छोड़कर पारब्रह्म की पूजक बन जाएगी।

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।। १८ ।।

हक परवरदिगार श्री प्राणनाथजी के दर्शन के लिए सब जहान (संसार) आ रहा है। सबके दिल के संशय मिट गए हैं और कुफ्र मिट गया है।

खाए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम।। १९ ।।

तब सब संसार एक साथ मिलकर खाते-पीते हैं और एक प्रीतम की बन्दगी करते हैं। इन सबकी जाति-पाति खत्म हो गई और एक नई रस्म निजानन्द धर्म में आ गए।

मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान।
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान।। २० ।।

यहां सबसे बड़ा दुनियां का मेला हुआ और सब जगह पहचान फैल गई। सबके घरों में आनन्द मंगल के बाजे बजे जिससे दुनियां में चारों खूंटों (तरफ) पर गूंज उठी।

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र।
बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र।। २१ ।।

इमाम साहब श्री प्राणनाथजी के आने पर लोगों ने बड़े अजब ढंग के बेहिसाब बाजे बजाए और बेहिसाब खुशियां मनाईं।

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान।
तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान।। २२ ।।

जब कुरान के रहस्य खुलें तो समझ लेना न्याय का दिन आ गया। तब सबके संशय मिट जाएंगे। ऐसा लगा कि दुनियां में कुफ्र था ही नहीं।

मगज माएने किन ना खुले, अव्वल बीच और अब।
ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब।। २३ ।।

रसूल साहब से लेकर अब तक किसी ने भी कुरान के रहस्यों को नहीं समझा। वह सब रहस्य जाहिर हो जाएं तब न्याय होगा।

कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ।
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ।। २४ ।।

कुरान के बीच रसूल साहब ने कुछ भेद (शब्दे मुक्तात) छिपा रखे हैं। अब श्री प्राणनाथजी के मुख से वर्णन करवाकर काजी (न्यायाधीश) की पहचान करवा रहे हैं।

Nijanand App

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान।
जांने काजी जुबां केहेलाए के, कर देऊं काजीकी पेहेचान।। २५ ।।

रसूल साहब ने और भी गुझ का गुझ (अर्श की मारफत की बातें) सुनी थीं। वह कुरान में नहीं लिखीं। यह जानकर न्यायाधीश वह छुपे रहस्य अपने मुख से बताएंगे जिससे उनके न्यायाधीश होने की पहचान हो जाएगी।

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिल में आन।
कसनी सेती परखिए, काजी कसौटी कुरान।। २६ ।।

इसलिए कुरान में इन बातों को गुझ (गुह्य) रखा है। अब कुरान की कसौटी से ही काजी की पहचान होगी।

मोमिनो सो असल का, महंमद सदा सनेह।
सो आखिर लों फुरमान, लिए खड़ा है एह।। २७ ।।

मोमिनों से मुहम्मद (श्यामा महारानी) का सदा से प्यार है, इसलिए वह आखिर तक खुदा का हुकम लेकर मोमिनों के साथ खड़े हैं।

महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान।
इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान।। २८ ।।

रसूल मुहम्मद के बिना श्री प्राणनाथजी की पहचान कौन कराएगा? क्योंकि इन दोनों का परमधाम से ही सम्बन्ध है, इसलिए यह भेद छिपा रखा है।

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर।
काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर।। २९ ।।

यह अल्लाह की वाणी है जो अपनी खबर देती है। काजी, ईसा, मुहम्मद मेंहदी तीनों एक हैं। इनको अलग नहीं किया जा सकता।

केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम।
इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद इमाम की गुझ (गुह्य) बातें मेरे से कहलवाई हैं, क्योंकि इस कुरान के भेद अल्लाह के सिवाय कोई नहीं खोल सकता।

कलाम अल्ला के माएने, कबूं ना खोले किन।
एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेंहेदी बिन।। ३१ ।।

अल्लाह के वचनों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला। उन वचनों में भी कहा है कि कुरान के भेद श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकेगा।

सो खसमें खोलाए मुझपे, यों कर किया हुकम।
कहे तूं आगे रूहें फरिस्ते, जिन प्यारे हक कदम।। ३२ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि राजजी महाराज ने हुकम करके मेरे से सब रहस्य की बातें खुलवाईं और कहा कि ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि, जिसको हक के कदमों से प्यार है, यह सब उनको जाहिर करो।

Nijanand App

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक।
खोल तूं आगे अर्स रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक।। ३३ ।।

कुरान के शब्द-शब्द में बहुत गुझ (गुप्त) भेद छिपे हैं। उनको मेरी अर्श की रूहें जो मुझे बहुत प्यारी हैं, उनके आगे खोल दो।

अब तुम सुनियों मोमिनो, सुनते होइयो श्रवन।
पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन।। ३४ ।।

हे मोमिनो! तुम सुनो और सुनकर उन पर ध्यान से विचार करो। तब तुम्हें इन वचनों के भेद समझ में आएंगे।

सनंधे सनंधे साखियां तिन साखी साखी पाव।
तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव।। ३५ ।।

एक-एक प्रकरण, फिर प्रकरण की चौपाई, फिर चौपाई के चौथाई भाग के एक चरण को भी दिल में भाव से ग्रहण करना।

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और।। ३६ ।।

हक श्री राजजी महाराज की शक्ति एक ही तन (ठिकाने) में होती है। उनसे ही वह दूसरों में फैलती है। पर किसी दूसरे ठिकाने (तन में) नहीं होती।

ईसा महंमद मेंहेदीय की, जो लों न पेहेचान तुम।
तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम।। ३७ ।।

ईसा, मुहम्मद और मेंहदी की जब तक तुम्हें पहचान नहीं होगी, तब तक तुम्हारे हाथ से लोगों को बहिश्तों में कायमी कैसे मिलेगी?

सुध नाहीं फरिस्तन की, न पेहेचान रूहन।
न पेहेचान मुतकी की, न पेहेचान मोमिन।। ३८ ।।

अभी तक ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरी सृष्टि की, मोमिनों की और फरिश्तों की पहचान किसी को नहीं थी।

सुध ना उतरने पुल-सरात, ना सुध सरा तरीकत।
ना पेहेचान हकीकत की, न पेहेचान हक मारफत।। ३९ ।।

अब तक किसी को कर्मकाण्ड की तलवार की धार को पार करने की सुध नहीं थी और न किसी के पास तरीकत, हकीकत और मारफत की ही पहचान थी।

पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत।
ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अर्स लाहूत।। ४० ।।

न अपने घर की पहचान थी और न मृत्यु लोक की। बैकुण्ठ की, अखण्ड अक्षर और अक्षरातीत के धाम की सुध नहीं थी।

ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून।। ४१ ।।

यह पहचान भी किसी को नहीं हुई कि पारब्रह्म को किसी ने बनाया नहीं। वह गुण-तत्वों से रहित है, उस जैसी किसी की शक्ल नहीं है। उसके जैसा कोई नमूना नहीं है। क्षर ब्रह्माण्ड की भी किसी को खबर न थी।

Nijanand App

ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत।
जिन से आए काफर, न सुध तिन जुलमत।।४२।।

न किसी को मोह तत्व (निराकार) की खबर थी, जिसमें चौदह तबक झूले की तरह झूलते हैं और न यह खबर ही थी कि जीवों की उत्पत्ति निराकार से है।

ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक।
जिन को हिदायत हक की, तिन सोहोबतें पाइए हक।।४३।।

खासल खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) जो सबसे बुजरक कहलाती है तथा जिनको हक की हिदायत है और जिनकी सोहोबत से पारब्रह्म की प्राप्ति की जा सकती है, उसकी सुध नहीं थी।

ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन।।४४।।

न निराकार की, न निर्गुण की, न शून्य की, न ब्रह्म सबमें व्यापक कैसे है और निरंजन की शक्ल कैसी है, इसकी सुध नहीं थी।

ना सुध ब्रह्मसृष्ट की, सुध सृष्ट न ईश्वरी।
हिन्दु जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी।।४५।।

हिन्दू जो सब जीव सृष्टि हैं उन्हें न तो ब्रह्मसृष्टि की पहचान है और न ही ईश्वरी सृष्टि की पहचान है।

विजिया अभिनंदन बुध जी, और निहकलंक अवतार।
वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदार।।४६।।

विजिया अभिनंदन बुद्ध निष्कलंक अवतार ही आखिरत में सबके मालिक होंगे, ऐसा वेदों ने भी कहा है।

इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन।
पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन।।४७।।

वेदों ने भी आखिरत के समय महाप्रलय की बात लिखी है, बहुतेरों ने वेदों को पढ़ा, पर महाप्रलय व कायमी कब होगी, किसी ने नहीं बताया।

करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन।
कुरान माजजा नबी नबुवत, होए साबित हुए एक दीन।।४८।।

चौदह तबकों का न्याय करना है और अक्षरातीत पर यकीन दिलाना है। तभी कुरान के भेद खुलेंगे और रसूल पारब्रह्म के नबी बनकर आए हैं, यह साबित होगा, तब सभी निजानन्द धर्म में आ जाएंगे।

कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान।
क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों न ए पेहेचान।।४९।।

अखण्ड घर कहां है, राजजी कहां हैं, अक्षरधाम कहां है, इनकी पहचान तब तक नहीं होगी जब तक मुहम्मद की तीनों सूरतों की पहचान (बसरी, मलकी और हकी) नहीं हो जाएगी।

पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल।
और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल।।५०।।

सबसे पहले हक के कलमे (तारतम) की पहचान होगी। फिर हक की, इमाम की और रसूल की पहचान होगी। यही सबसे बड़ा न्याय है। बहिश्तों की कायमी का बाकी न्याय बाद में होगा।

Nijanand App

आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए।
दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए।।५१ ।।

आशिक-माशूक को दो लिखा है, परन्तु यह दोनों एक ही हैं। इनको दो कहना गलत है, क्योंकि यह दोनों एक दूसरे में गर्क रहते हैं। अब देखो न्यायाधीश क्या कहते हैं?

एक भी कहे ना बने, दो भी कहे ना जाए।
ना भेले ना जुदे कहे, अब फुरमान क्या फुरमाए।।५२ ।।

दोनों को एक भी नहीं कहा जा सकता और दो भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि दोनों इकट्ठे भी नहीं हैं और दोनों अलग भी नहीं हैं। अब देखो कुरान में इसकी बाबत क्या लिखा है।

सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग।
त्यों महंमद मेंहेदी हक से, ए दोऊ एकै अंग।।५३ ।।

सिरदार (प्रधान) कभी भी अकेला नहीं होता। हाकिम के साथ हुकम सदा रहता है। इस तरह से यहां मुहम्मद मेंहेदी और हक श्री राजजी दोनों एक ही अंग हैं।

जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान।
हुकम छोड़ हाकिम फिर्या, सो हाकिम हुकम सुभान।।५४ ।।

रसूल मुहम्मद के साथ अली सदा रहते हैं। हाकिम हुकम को छोड़कर वापस गया था, तो हुकम ही हाकिम बन गया।

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए।।५५ ।।

यही न्यायाधीश का फैसला है। इसके माएने जाहिर करो (समझो)। यह आशिक-माशूक की पहचान का दृष्टान्त है। इसको और भी अच्छी तरह से बतलाती हूं।

जिन कोई कहे पट बीच में, मासूक और आसिक।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक।।५६ ।।

आशिक और माशूक के बीच कोई परदा मत समझना। आशिक कभी भी माशूक से परदा नहीं करता। इस तरह माशूक राजजी महाराज ने कहा है।

परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए।।५७ ।।

अपने माशूक के आगे आशिक कभी परदा नहीं करते। आशिक माशूक तब कहे जाते हैं जब दोनों एक अंग होते हैं।

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान।
तो बीच कह्या क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान।।५८ ।।

जब आशिक माशूक अलग नहीं हैं जैसा कि ऊपर प्रमाण दिया है, तो दोनों के बीच जबराईल फरिश्ता कैसे आता जाता है?

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सब हैवान या खलक।
तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक।।५९ ।।

यदि खुदा शहेरग से नजदीक है और सबके अन्दर है तो रसूल साहब के पास जबराईल के भेजने की जरूरत क्यों हुई?

Nijanand App

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक।
ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक।।६०।।

जब तक यह संशय नहीं मिट जाएगा तब तक हक की पहचान कैसे होगी? इस भेद को भी खोल कर मोमिनों के संशय दूर कर देता हूं।

एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान।
तिनको कहिए फरिस्ता, नूर जोस अंग का जान।।६१।।

रसूल और हक (पारब्रह्म) के बीच में जो यह सुरता घूमती है, यही अक्षर के जोश के अंग का फरिश्ता जबराईल है।

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन।।६२।।

रसूल साहब राजजी का हुकम (कुरान) लेकर जब संसार में आए तो उनका नाम गैन (ग़ं) धराया और वही रसूल साहब जब राजजी का हुक़म बजाकर वापस गए तो फिर वही ऐन के ऐन (ए) हो गए।

सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए।
मासूक क्यों महंमद कह्या, क्यों होए आसिक अल्लाह।।६३।।

इस तरह से समझाकर मोमिनों के सब संशय दूर कर दो। खेल में आने के कारण मुहम्मद को माशूक और अल्लाह को आशिक कहा गया।

तो कहया मासूक महंमद, आसिक अपना नाम।
बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम।।६४।।

कुरान की वाणी कहती है कि रसूल साहब हक के हुकम से बंधे होने के कारण जब तक वह खेल में हैं, मुहम्मद माशूक हैं और अल्लाह आशिक हैं।

वली पैगंमर फरिस्ते, आए मिले सब संग।
ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग।।६५।।

जैसे गुण, अंग, इन्द्रियां एक साथ जागृत हो जाती हैं, उसी तरह इमाम मेंहदी के आने से सभी ब्रह्मसृष्टि ईश्वरी सृष्टि और फरिश्ते सब इकट्ठे होकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में आ गए।

जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए।
फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए।।६६।।

जब ईसा, मेंहदी और मुहम्मद अर्थात् बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरत मिल गईं तो सभी मिल गए, तब पीछे क्या देखना। सब संशय मिट गए।

हक जो नूर के पार है, तिन खुद खोले द्वार।
बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार।।६७।।

श्री राजजी महाराज जो अक्षर के पार परमधाम में रहते हैं, उन्हीं ने स्वयं पार के दरवाजे खोले हैं। अखण्ड परमधाम की पहचान तभी मिली जब श्री राजजी महाराज ने क्षर के बाहर का ज्ञान दिया।

पेहेचान मेंहेदी महंमद, और ईसा अली मोमिन।
ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन।।६८।।

मेंहदी, मुहम्मद, ईसा, अली और मोमिन सबकी पहचान हो गई। यही न्याय मिलने से (इनकी पहचान मिलने से) हम सबकी सन्तुष्टि हो गई।

Nijanand App

अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत।। ६९ ।।

अब मोमिन कहते हैं कि फरिश्तों का बयान और आखिरत में ब्रह्माण्ड कैसे लय होगा? बहिश्तें कैसे मिलेंगी? कयामत कैसे होगी? बतलाओ।

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल।। ७० ।।

यह सब बातें समझा करके हमारे दिल को पाक करो (संशय मिटाओ) इसके बाद हम सब मोमिन मिलकर घर की बातें पूछेंगे।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १२९५ ।।

सनन्ध–फरिस्ते फना आखिरत भिस्त कयामत की

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और।। १ ।।

अब नूरी फरिश्तों की बात करती हूं और उनके ठिकाने बताती हूं। इमाम साहब के बिना इसका भेद कोई नहीं बता सकता।

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।। २ ।।

अक्षर के हुकम के नीचे पांच फरिश्ते हैं। यह एक क्षण में कई ऐसे ब्रह्माण्ड बनाते हैं (असराफील जबराईल, अजाजील, अजराईल, मेकाईल)।

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील।। ३ ।।

इसमें एक रसूल साहब के साथ जबराईल फरिश्ता है जो अक्षर धाम से राजजी का सन्देश लेकर रूहों के पास आता है।

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार।
ए असल कतरा नूर का, जिनको एह विस्तार।। ४ ।।

और बाकी जो चार फरिश्ते खेल के लिए खड़े हैं वह अक्षर के ही अंश हैं, जिन्होंने इतना बड़ा विस्तार बना रखा है।

यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब।
सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब।। ५ ।।

इन चारों में एक फरिश्ता (अजाजील) है जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। एक जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील है जो अक्षर से अपने समय पर आया है।

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक।। ६ ।।

अजाजील और असराफील दोनों एक धाम के हैं। अजाजील से सारी पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। उसका भी थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App